इब्रानियों 6:6 को समझना

फ्रैंकलीन द्वारा अध्ययन

इब्रानियों 6:1-8 इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, **हम सिद्धता की ओर बढ़ते जाएं,** और मरे हुए कामों से **मन फिराने**, और परमेश्वर पर विश्वास करने, (2) और बपतिस्मों और हाथ रखने, और मरे हुओं के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षारूपी नेव, फिर से न डालें।(3) और **यदि परमेश्वर चाहे**, तो हम यहीं करेंगे।(4) क्योंकि जिन्हों ने एक बार **ज्योति पाई** है, जो स्वर्गीय वरदान का **स्वाद चख** चुके हैं और **पवित्र आत्मा के भागी हो गए हैं** (5) और **परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं**।(6) यदि वे भटक जाएं**; तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अनहोना है**; क्योंकि **वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं** और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।(7) क्योंकि जो भूमि वर्षा के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती- बोई जाती है, उन के काम का साग- पात उपजाती है, वह परमेश्वर से आशीष पाती है।(8) पर **यदि** वह झाड़ी और ऊंटकटारे उगाती है, तो **निकम्मी** और **स्रापित** होने पर है, और उसका अन्त जलाया जाना है।।

सही अर्थ समझने के लिए हमेशा सन्दर्भ का अध्ययन करना ज़रुरी होता है :

इब्रानियों 5:12-14 समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवश्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? ओर ऐसे हो गए हो, कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।

- **दूध** शिशुओं के लिए होता है ताकि उनके कद, ताकत और समझ का विकास हो
- लेखक का यहाँ अभिप्राय **परिपक्वता** से है - बालकों से **पुत्रों** में बढ़ जाना। जो परिपक्व होगा वह दूसरों को सिखाएगा - शिष्यता

(13) क्योंकि **दूध** पीनेवाले बच्चे को तो **धर्म के वचन** की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह **बालक** है।

- तुलना करें: गलातियों 4:1-2 मैं यह कहता हूं, कि **वारिस** जब तक **बालक** है, यद्यपि सब वस्तुओं का **स्वामी** है, तौभी उस में और दास में कुछ भेद नहीं।(2) परन्तु **पिता के ठहराए हुए समय** तक रक्षकों और भण्डारियों के वश में रहता है।

- वह यहाँ उस परिपक्व होने की प्रक्रिया के बारे में बता रहा है जब बालक अपने पिता की इच्छा को पूरी करने की चाहत करता है, उसे सीखता है, उसकी आज्ञा का पालन करता है।

- हमारा उदाहरण यीशु है : इब्रानियों 5:8 और पुत्र होने पर भी, उस ने **दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी**। दु:ख उठाने का उद्देश्य है - ताकि हम में आज्ञाकारिता और भरोसे के द्वारा परिपक्वता ला सके।

- अपने पिता की आज्ञा मानने की इस प्रक्रिया में, उसके पुत्र बनने में, तथा अपनी मीरास, वह प्रतिज्ञा किए देश में प्रवेश करने में इस्राएल की सन्तान ने चालीस वर्ष की देरी की।

(14) पर **अन्न सयानों** के लिये है, जिन के ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिये **पक्के** हो गए हैं।।

- शिशु दूध से शुरुवात करते हैं लेकिन उन्हें पूरी तरह बढ़ने, शक्तिशाली और ज्ञानवान बनने के लिए **अन्न** की ज़रूरत पड़ती है। **सयाने** का अर्थ यहाँ पुत्र होने से है न कि बालक होने से।

इब्रानियों 6:1 इसलिये आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर, हम **सिद्धता** की ओर बढ़ते जाएं, और **मरे हुए कामों** से **मन फिराने**, और परमेश्वर पर **विश्वास** करने

- यहाँ स्वर्ग जाने का सवाल **नहीं है**, लेकिन **बढ़ते जाने** की है ! **सिद्धता (परिपक्वता) ! मरे हुए कामों को करने, नियम-विधियों का पालन करने और विश्वास पर वाद विवाद करने से मन फिराना।**

इब्रानियों 6:3 और **यदि परमेश्वर चाहे**, तो हम यहीं करेंगे।

- **यदि** पिता ने **अनुमति** दी तो जिस तरह हमने गलातियों 4:1-2 में देखा (...पिता के ठहराए हुए समय तक) हम **सिद्धता** (पुत्रता) की ओर बढ़ते जाएंगे

इब्रानियों 6:4 क्योंकि जिन्हों ने एक बार **ज्योति** पाई है, जो स्वर्गीय वरदान का **स्वाद** चख चुके हैं और पवित्र आत्मा के **भागी** हो गए हैं

- **एक बार ज्योति पाई** का अर्थ है "प्रभु ने उन्हें इस बात का प्रकाशन दिया है कि वह कौन है"। जिस प्रकार उसने उन दो लोगों की आँखों को खोला था जो इम्माऊस के रास्ते पर थे। (लूका 24:1-35)

  इफिसुस के **विश्वासियों** को लिखते हुए पौलुस ने कहा:1:18 मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारे मन की आंखें **ज्योतिर्मय** हों कि तुम जान लो .... ज्योतिर्मय या प्रकाशन परमेश्वर की ओर से आता है और उसे जानने के लिए ज़रुरी है। इब्रानियों 6:4 के लोगों ने ज्योति पाई।

  इब्रानियों 10:32 परन्तु उन पहिले दिनों को स्मरण करो, जिन में तुम **ज्योति पाकर** दुखों के बड़े कष्टों में स्थिर रहे।
  सभी विश्वासियों के समान उन्हों ने भी दु:ख उठाया क्योंकि उन्होंने अपने पुराने मार्गों को छोड़ दिया था, और बाकि और सब लोगों की तरह नहीं चले (यूहन्ना 15:18-19; 2 तीमु 3:13; 1 पतरस 4:4)

- **स्वर्गीय वरदान का स्वाद चख चुके हैं।** परमेश्वर के दान का पुराना नियम में से उदाहरण: जंगल में मन्ना (निर्गमन 16)। जिस प्रकार पौलुस 1 कुरिन्थियों 10:3-4 में कहता है, और **सब** ने एक ही आत्मिक भोजन किया। (4) और **सब ने एक ही आत्मिक जल पीया**, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे, जो उन के साथ- साथ चलती थी; और **वह चट्टान मसीह था**।

- **पवित्र आत्मा के भागी हो गए,** केवल विश्वासी ही "स्वयं में" पवित्र आत्मा को प्राप्त करने वाले बन जाते हैं। 1 कुरिन्थियों 6:19 तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, **केवल विश्वासियों को "अपने भीतर" पवित्र आत्मा मिला होता है।**

इब्रानियों 6:5 **और परमेश्वर के उत्तम वचन का और आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं।**

- **उत्तम वचन का .... स्वाद चख चुके हैं : "स्वाद चखना**" का प्रतीकात्मक अर्थ अनुभव करना है। यूनानी भाषा में **"वचन**" को "रीमा" कहते हैं जो "बोले गए शब्दों" की ओर संकेत करता है। पुराने नियम में उसने कहा और अपनी संतानों को बताया कि वह उन्हें क्या देगा तथा फिर उसने किया - मरुभूमि में उन्हें खिलाया और चट्टान में से उन्हें पानी पिलाया। उसका वचन सदा भला है।

  इब्रानियों 1:1-2 पहले समय में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति भांति से भविष्यद्वक्ताओं के **द्वारा बातें** करके।(2) इन दिनों के अन्त में **हम से पुत्र के द्वारा बातें की**

  यूहन्ना 10:27 **मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं**, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। जो उसके है वह उन्हीं से बात करता है।

  यूहन्ना 8:43 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? इसलिये कि **तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते**। जो **उसके नहीं हैं** वे उन बातों को नहीं **"सुनते"** जो वह कहता है।

  ऊपर दिए गई इन दो वचनों के सन्दर्भ में, उसकी सन्तान, उस पर विश्वास करने वाले, उसके वचन को सुनते और पूरे होने का अनुभव करते हैं।

- वह उन लोगों को लिख रहा है जो उसके **आनेवाले युग की सामर्थों का स्वाद चख चुके हैं,** जो उसका राज्य है, जो विश्वास करने वालों के लिए अपनी सामर्थ्य के साथ अभी यहाँ है। परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है। (लूका 17:21) मैने तुम्हे ... सारी सामर्थ पर अधिकार दिया है (लूका 10:19)।

इब्रानियों 6:6 यदि वे भटक जाएं; **तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अन्होना है;**

- इस पद को यूनानी भाषा से अनुवाद करना बहुत कठिन है। यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन ध्यान रखें: क्योंकि परमेश्वर के साथ कुछ भी असम्भव नहीं है। (लूका 1:37)।

- एक बात बहुत ज़रुरी है : "उन्हें फिर नया बनाना**" किस लिए**?

  धर्मी ठहराया जाने के लिए नहीं! उद्धार के लिए नहीं! परन्तु **मन फिराने** के लिए !

लेखक लगातार पुराने नियमों के उदाहरणों का ज़िक्र करता है। कहा जाता है कि इब्रानियों की पत्री को इब्रानी विश्वासियों को लिए लिखा गया था ताकि उन्हें इब्रानी न बने रहने की शिक्षा दें। लेखक परमेश्वर के **लहू द्वारा मोल** लिए लोगों के उदाहरण का ज़िक्र कर रहा है जिन्हें वह बचाकर मिस्र से बाहर निकाल लाया था। उन्होंने परमेश्वर के दान और उद्धार का एक के बाद एक चमत्कार देखा। लेकिन बार बार उन्होंने विद्रोह किया और उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया।

अन्तिम आज्ञा उल्लंघन उस देश में प्रवेश करने से मना करना था जिसके लिए उसने कहा था कि वह उन्हें देगा। जासूसों को उस देश में भेजा गया (गिनती 13:2, 21)। उन्होंने उसकी अच्छाई, उसके फल का **स्वाद चखा** (23,27)। परन्तु जब उन्होंने दानवों को देखा (31-33) तो उनके विश्वास को भय ने समाप्त कर दिया। उन्होंने जो कुछ देखा उसके कारण अब उन्हें उसके वचन पर विश्वास नहीं रहा। (14:1-4) और उन्होंने अपनी मीरास पाने तथा **पुत्रों** के समान **आज्ञा मानने से इनकार कर दिया।**

गिनती 14:22-23 परमेश्वर ने कहा: उन सब लोगों ने जिन्हों ने मेरी महिमा मिस्र देश में और जंगल में देखी, और मेरे किए हुए आश्चर्यकर्मों को देखने पर **भी दस बार मेरी परीक्षा की,** और **मेरी बातें नहीं मानी**, (23) इसलिये जिस देश के विषय मैं ने **उनके पूर्वजों से शपथ खाई, उसको वे कभी देखने न पाएंगे**; अर्थात् जितनों ने मेरा अपमान किया है उन में से कोई भी उसे देखने न पाएगा।

- जो उनके पिता ने उन्हें **बताया** था, उसे उन्होंने पुत्रों के समान आज्ञा मानने से इनकार कर दिया लेकिन जो कुछ उन्होंने अपनी आँखों से **देखा** उसका विश्वास किया। अत: वह उन्हें **ताड़ना** देगा और वे **बच्चों के समान** ही रहेंगे।
- आज भी बहुत से विश्वासी **बच्चों के समान** ही रहते हैं, परमेश्वर को परखते हैं, उसकी आवाज़ नहीं सुनते, अपने पिता के साथ घनिष्टता का सम्बन्ध तथा **पुत्र होने** के सौभाग्य और आशीषों का आनन्द नहीं उठाते।

गिनती 14:39-45 तब मूसा ने ये बातें सब इस्त्राएलियों को कह सुनाई और वे **बहुत विलाप** करने लगे। (40) और वे बिहान को सवेरे उठकर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि **हम ने पाप किया है**; परन्तु **अब तैयार हैं,** और उस स्थान को जाएंगे जिसके विषय यहोवा ने वचन दिया था। **(उन्होंने अपने पापों का अंगीकार, अपने मन को बदला, पश्चाताप किया लेकिन बहुत देर हो चुकी थी)** (41) तब मूसा ने कहा, तुम यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो? **यह सफल न होगा**। (42) **यहोवा तुम्हारे मध्य में नहीं है** **(ताकि तुम्हें उसका वायदा, उसकी विजय मिले**), मत चढ़ो, नहीं तो शत्रुओं से हार जाओगे। (43) वहां तुम्हारे आगे अमालेकी और कनानी लोग हैं, सो तुम तलवार से मारे जाओगे; **तुम यहोवा को छोड़कर फिर गए हो** **(यह इब्रानियों 6:6 में बताया गया "भटक जाना" है**), इसलिये **वह** तुम्हारे संग नहीं रहेगा। (44) परन्तु वे ढिठाई करके पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए, परन्तु यहोवा की वाचा का सन्दूक, और मूसा, छावनी से न हटे। (45) अब अमालेकी और कनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उन पर चढ़ आए, और होर्मा तक उनको मारते चले आए।।

वे परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने से तथा उसका पालन करने से भटक गए कि जानते कैसे इस पृथ्वी पर अपनी मीरास पाएं और किस प्रकार उसे जीतें। और उन्होंने इसका परिणाम भुगता - जंगलों में रहे। यह उनके **अनेक** विद्रोही कार्यों के बाद हुआ तथा **परमेश्वर ने उनकी पश्चाताप को स्वीकार** नहीं किया।

लगातार आज्ञा उल्लंघन का परिणाम कठोर ताड़ना हुई।
नीतिवचन 13:24 जो अपने बेटे से प्रेम रखता है, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है।
इब्रानियों 12:6 प्रभु जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है
इब्रानियों 12:10 वह हमारी ताड़ना हमारे लाभ के लिये करता है

अगर ताड़ना नहीं होती तो अगली पीढ़ी, उनकी सन्तान, अपने पिताओं के समान रहते। चालीस सालों तक जंगल में कठिनाइयों का सामना करने के द्वारा उनकी सन्तान समझ गई कि **आज्ञाकारिता** उनके जीवन को काफी बेहतर बना देती है और फिर उन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश किया और पुत्रों के समान वहाँ के सभी दानों और आशीषों का आनन्द लिया।

- प्रतिज्ञा किया हुआ देश, परमेश्वर के राज्य का एक प्रकार है।

यह हम सब के लिए चेतावनी है। 1 कुरिन्थियों 10:6-13 **ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरी**, कि जैसे उन्हों ने लालच किया, **वैसे हम** बुरी वस्तुओं का लालच न करें। (7) और न तुम मूरत पूजनेवाले बनों;... (8) और न हम व्यभिचार करें;... (9) और न हम प्रभु को परखें;... (10) और न तुम कुड़कुड़ाओ, ... (11) परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ी, **दृष्टान्त की रीति** पर थीं; और **वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।**

जब हम निरन्तर उसकी आज्ञा का उल्लंघन करते हुए अपना जीवन जीते हैं और उसकी वचन का पालन नहीं करते, तो ऐसा समय आ सकता है जब वह आपको क्षमा नहीं देगा। और आप एक बालक के समान रहेंगे तथा वो लाभ और विशेष अधिकारों का आनन्द नहीं उठा सकते, जिसके लिए वह यहाँ इस पृथ्वी पर अपने राज्य में, किसी परिपक्व पर भरोसा कर सकता है।

2 तीमुथियुस 2:24-26 और विरोधियों को नम्रता से समझाए, **क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन फिराव का मन दे**,

- ❖ अनन्त जीवन? - जी हाँ ! उसके वाचा के लहू के द्वारा।

- ❖ इस पृथ्वी पर आशीषित जीवन? - हमारी आज्ञाकारिता पर निर्भर।

गिनती 14:30-33 उस में से यपुन्ने के पुत्र कालिब और नून के पुत्र यहोशू को छोड़ कोई भी उस देश में न जाने पाएगा, जिसके विषय मैं ने शपथ खाई है कि तुम को उस में बसाऊंगा। (31) परन्तु **तुम्हारे बालबच्चे** जिनके विषय तुम ने कहा है, कि ये लूट में चले जाएंगे, उनको **मैं उस देश में पहुंचा दूंगा;** और वे उस देश को जान लेंगे जिस को तुम ने **तुच्छ जाना है**। (32) परन्तु तुम लोगों की लोथें इसी जंगल में पड़ी रहेंगी। (33) और जब तक तुम्हारी लोथें जंगल में न गल जाएं तब तक, अर्थात् चालीस वर्ष तक, तुम्हारे **बालबच्चे** जंगल में <u>तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते</u> हुए चरवाही करते रहेंगे।

वे जंगल में मर गए। वे वापस मिस्र नहीं जा सके क्योंकि **वे परमेश्वर के थे**! वे उसके लहू द्वारा खरीदे सन्तान थे।

इब्रानियों 6:6 क्योंकि वे **परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रगट में उस पर कलंक लगाते हैं।**

लेखक दुबारा पुराने नियम का उदाहरण देता है ताकि जिनके लिए वह लिख रहा है, वे इसे समझ जाएं।

मूसा का उदाहरण: निर्गमन 17:2-7 इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से क्यों वादविवाद करते हो? और **यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?** (3) फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें हमारी संतानों और पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है ? (4) तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को तैयार हैं। (5) यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और **जिस लाठी से तू ने नील नदी पर मारा था,** उसे अपने हाथ में लेकर लोगों के आगे बढ़ चल। (6) देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और **तू उस चट्टान पर मारना**, तब उस में से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया। (7) और मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा, क्योंकि इस्राएलियों ने वहां वादविवाद किया था, और **यहोवा की परीक्षा यह कहकर की,** कि क्या यहोवा हमारे बीच है वा नहीं ?

यह यीशु मसीह के **क्रूसीकरण** का चिह्न है। मूसा की लाठी **दण्ड देने की छड़ी** थी जिसने मिस्रियों को उनके पापों के लिए दण्डित किया था और अब “चट्टान” अर्थात यीशु मसीह, जिसने हमारे दण्ड को अपने ऊपर ले लिया (रोमियों 8:2-3) दण्डित किया गया, तथा अब उसके लोगों के पीने के लिए पानी (जीवन के आत्मा का एक चिह्न) बहता है।

> 1 कुरिन्थियों 10:4 और सब ने एक ही **आत्मिक जल पीया,** क्योंकि वे उस **आत्मिक चटान** से पीते थे, जो उन के साथ- साथ चलती थी; और **वह चट्टान मसीह था।**

यूहन्ना 4:14 परन्तु जो कोई **उस जल** में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा: वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा **जो अनन्त जीवन** के लिये उमड़ता रहेगा।

थोड़े समय के बाद जब वे जंगल में थे, फिर से उनके पास पानी नहीं था:

गिनती 20:2-13 वहां मण्डली के लोगों के लिये पानी न मिला; सो वे मूसा और हारून के विरुद्ध इकट्ठे हुए। (3) और लोग यह कहकर मूसा से झगड़ने लगे, कि भला होता कि हम उस समय ही मर गए होते जब हमारे भाई यहोवा के सामने मर गए! (4) और तुम यहोवा की मण्डली को इस जंगल में क्यों ले आए हो, कि हम अपने पशुओं समेत यहां मर जाए? (5) और तुम ने हम को मिस्र से क्यों निकालकर इस बुरे स्थान में पहुंचाया है? यहां तो बीच, वा अंजीर, वा दाखलता, वा अनार, कुछ नहीं है, यहां तक कि पीने को कुछ पानी भी नहीं है।(6) तब मूसा और हारून मण्डली के साम्हने से मिलापवाले तम्बू के द्वार पर जाकर अपने मुंह के बल गिरे। और यहोवा का तेज उनको दिखाई दिया।(7) तब यहोवा ने मूसा से कहा,(8) उस लाठी को ले, और तू अपने भाई हारून समेत मण्डली को इकट्ठा करके उनके देखते उस **चट्टान से बातें कर** (चट्टान से अर्थ ऊंचा स्थान), तब वह अपना जल देगी; इस प्रकार से तू चट्टान में से उनके लिये जल निकाल कर मण्डली के लोगों और उनके पशुओं को पिला। (9) यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार मूसा ने **उसके सामने से लाठी को ले लिया।**

- मूसा की लाठी नहीं, लेकिन हारून की लाठी (गिनती 17:10) जो मध्यस्था के लिए एक याजक की लाठी थी। न्याय की लाठी नहीं थी।

(10) और मूसा और हारून ने मण्डली को उस चट्टान के सामने इकट्ठा किया, तब मूसा ने उस से कह, हे दंगा करनेवालो, सुनो; क्या हम को इस चट्टान में से तुम्हारे लिये जल निकालना होगा?(11) तब मूसा ने हाथ उठाकर **लाठी चट्टान पर दो बार मारी**;

- क्रोध में मूसा ने आज्ञा का उल्लंघन किया और एक प्रकार से, "***परमेश्वर के पुत्र को दुबारा क्रूस पर चढ़ाया***"। हमारी माफ़ी, परमेश्वर से मेल तथा अनन्त जीवन देने वाली सिद्धता के लिए चट्टान पर पहले ही दण्ड की लाठी (क्रूस) से प्रहार किया जा चुका था। अब, ऊंचे स्थान पर उठाए जा कर, किसी भी जरूरत के लिए जो कुछ भी करना था (और करना है) वह यह है कि, चट्टान से बातें करना। यह कुछ और सिखाता था परन्तु मूसा ने आज्ञा उल्लंघन किया।

परन्तु फिर भी: उस में से बहुत पानी फूट निकला, और मण्डली के लोग अपने पशुओं समेत पीने लगे। परमेश्वर दयालु और अनुग्रहकारी है (भजन 86:15)

- यूहन्ना 7:37-39 यदि कोई पियासा हो तो मेरे पास आकर पीए।(38) जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।(39) उस ने यह वचन **उस आत्मा** के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक नहीं उतरा था; क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

आज्ञा न मानने का परिणाम :

(12) परन्तु मूसा और हारून से यहोवा ने कहा, तुम ने जो **मुझ पर विश्वास** नहीं किया, और **मुझे** इस्त्राएलियों की **दृष्टि में पवित्र** नहीं ठहराया, इसलिये **तुम इस मण्डली को उस देश में पहुंचाने न पाओगे** जिसे मैं ने उन्हें दिया है।

- याकूब 3:1 हे मेरे भाइयों, तुम में से बहुत उपदेशक न बनें, क्योंकि जानते हो, कि हम **उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे**।

मूसा परमेश्वर से विनती करता है : व्यवस्थाविवरण 3:23 - 27 **उसी समय मैं ने यहोवा से गिड़गिड़ाकर** विनती की, कि हे प्रभु यहोवा, (25) मुझे पार जाने दे कि यरदन पारके उस उत्तम देश को, अर्थात उस उत्तम पहाड़ और लबानोन को भी देखने पाऊँ। (26) परन्तु **यहोवा तुम्हारे कारण मुझ से रूष्ट हो गया** (दूसरों पर दोष?), और मेरी न सुनी; किन्तु यहोवा ने मुझ से कहा, **बस कर; इस विषय में फिर कभी मुझ से बातें न करना।**

परमेश्वर मन फिराव की अनुमति नहीं देता: गिनती 27:12-14 फिर यहोवा ने मूसा से कहा, इस अबारीम नाम पर्वत के ऊपर चढ़के उस देश को देख ले जिसे मैं ने इस्त्राएलियों को दिया है।(13) और जब तू उसको देख लेगा, तब अपने भाई हारून के समान तू भी अपने लोगों मे जा मिलेगा,(14) क्योंकि सीन नाम जंगल में तुम दोनों ने मण्डली के झगड़ने के समय **मेरी आज्ञा को तोड़कर मुझ से बलवा किया**, और **मुझे सोते के पास उनकी दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया।** (यह मरीबा नाम सोता है जो सीन नाम जंगल के कादेश में है)

- जब हम परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं तब हम परमेश्वर को पवित्र ठहराते हैं।

क्या मूसा ने प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश किया? नहीं!

क्या मूसा स्वर्ग में गया ? हाँ ! इब्रानियों 3:5 लूका 9:28-31

इसलिए हम समझते हैं कि आज्ञा न मानने वाले विश्वासी के लिए "परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाने और प्रगट में उस पर कलंक लगाने "(इब्रानियों 6:6) का अर्थ, चट्टान से बातें करने और अपने पापों का अंगीकार करने से **फिरना** तथा किसी और कार्य अथवा बलिदान की ओर **मुड़ना**, जिस प्रकार कहा जाता था कि स्वर्ग जाने के लिए व्यवस्था का पालन करना आवश्यक है।

ऐसा करके हम "चट्टान को फिर से मारते हैं", हम यह कहते हैं कि यीशु मसीह की मृत्यु पर्याप्त नहीं है तथा और भी कुछ की आवश्यकता है। यह ऐसा बोलना है कि उसका अनुग्रह पर्याप्त नहीं है और यह कि किसी मनुष्य को उद्धार पाने के लिए और कुछ भी जोड़ना या कुछ और कार्य करना होगा। और ये **"उस पर कलंक लगाना है"** क्योंकि मेरा कहना है कि वह अपने कहे अनुसार कुछ करने या देने में सक्षम नहीं है और यह उसको पवित्र नहीं ठहराता।

क्या इसका निष्कर्ष यह है कि एक **सच्चा विश्वासी** अपने किसी भयंकर अनाज्ञाकारिता के कारण अपने विश्वास को खो सकता है और उनका "नए जन्म" को प्राप्त करने के लिए **दुबारा** क्रूस के निकट आना आवश्यक है, इस अभिप्राय के साथ कि **वे परमेश्वर के पुत्र को अपने लिये फिर क्रूस पर चढ़ाएं और प्रगट में उस पर कलंक लगाएं।** इस सन्दर्भ में जो सच्चे विश्वासी के लिए आवश्यक है वह "चट्टान पर फिर से मारना" **नहीं** परन्तु सच्चे पश्चाताप और अपने पापों का अंगीकार करते हुए (यूहन्ना 1:9) **चट्टान से बातें करना** है।

क्या परमेश्वर **को उनका मन फिराव ग्रहण नहीं करना चाहिए** - जो **बहुत अनहोना** है यदि आप मूसा नहीं हैं तो - आप **अपना** अनन्त उद्धार **नहीं** खोएंगे। यहाँ पृथ्वी पर आप परमेश्वर की **पूरी** आशीषों और दानों से दूर **जंगल के जीवन** को परिणामस्वरूप भुगत सकते हैं।

इब्रानियों 6 **का स्वर्ग या नरक जाने से कुछ लेना देना नहीं** है, परन्तु **विश्वासी की परिपक्वता** से है, अपने बचपने को छोड़ कर पुत्रत्व और आज्ञाकारिता में प्रवेश करना **जो परमेश्वर का राज्य** है। भजन संहिता 106:32-33

- परमेश्वर का राज्य वहाँ है जहाँ वह वास्तव में राजा है! परमेश्वर है!

इब्रानियों 6:7-8 क्योंकि जो **भूमि वर्षा** के पानी को जो उस पर बार बार पड़ता है, पी पीकर जिन लोगों के लिये वह जोती- बोई जाती है, **उन के काम का साग- पात उपजाती है**, वह परमेश्वर से आशीष पाती है।(8) पर यदि वह झाड़ी और ऊंटकटारे उगाती है, तो **निकम्मी** और शापित होने पर है, और उसका अन्त **जलाया** जाना है।।

- भूमि = विश्वासी

  हम परमेश्वर के खेत हैं: 1 कुरिन्थियों 3:9 परमेश्वर के खेत हो तथा : **अच्छे बीज** का बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है। मत्ती 13:37

- बीज = परमेश्वर का वचन

  1 पतरस 1:23 क्योंकि तुम ने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से **परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन** के द्वारा नया जन्म पाया है।

- वर्षा का पानी = पवित्र आत्मा का पानी यूहन्ना 7:38-39 उस ने यह वचन उस **आत्मा के विषय** में कहा याकूब 5:7-8 गृहस्था पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।

- पद 8 : "निकम्मी", इसके यूनानी शब्द का अर्थ **"किसी लायक नहीं** होना" है। 1 कुरिन्थियों 9:27 में **इसी शब्द** का अनुवाद **अयोग्य** है। मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से **अयोग्य** ठहरूं। संदर्भ से स्पष्ट है कि अयोग्य का अर्थ **"इनाम अथवा प्रतिफल**" के अयोग्य ठहरना है।

  - यह छोड़ना या त्यागना नहीं है, परन्तु यह कि वह अब किसी काम के योग्य नहीं

2 तीमुथियुस 2:21 यदि कोई अपने आप को इन से शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बरतन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के **काम आएगा**, और हर भले काम के लिये तैयार होगा।

हम अपनी **परिपक्वता** के अनुसार तथा सत्य के प्रति अपनी आज्ञाकारिता से या तो अपने स्वामी के **काम आएँगे** अथवा नहीं। हम गलातियों के विश्वासियों के अनुसार हैं।

गलातियों 5:4 तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से **अलग** और **अनुग्रह से गिर गए हो।**

- यहाँ "**अलग**" के यूनानी शब्द का शाब्दिक अर्थ: **पूरी तरह से निष्क्रिय या व्यर्थ है** (स्ट्रोंग 2673)। **अलग कर देना।**
- **अनुग्रह से गिर गए** - केवल अनुग्रह पर निर्भर नहीं, परन्तु यह मानना कि क्रूस पर मसीह के पूरे हुए कार्य के अलावा कुछ और कार्य अथवा बलिदान को भी **डालने** की आवश्यकता है और इस इसका यह अभिप्राय है मानो चट्टान को फिर से मारना - और इस प्रकार उस पर कलंक लगाना।

  इफिसियों 2:8 क्योंकि विश्वास के द्वारा **अनुग्रह ही से** तुम्हारा **उद्धार हुआ है,** और यह **तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।**

गलातियों 5:7 तुम तो भली भांति दौड़ रहे थे, अब किस ने तुम्हें **रोक दिया**, कि सत्य को **न मानो।**
समस्या यह है - अनुग्रह से दूर, निष्क्रिय हो गए, रोक दिए गए।

- पर यदि वह झाड़ी और ऊंटकटारे **उगाती** है - "चट्टान पर मारे जाने" (पाप के लिए दण्ड) तथा "चट्टान से बातें करने" (अंगीकार करना या माँगना) के ऊपर निर्भर रहने के बजाय शरीर के विनाशकारी तथा व्यर्थ कार्य।

- "शापित" होने पर, अभी शापित नहीं है परन्तु शापित होने के निकट है
  1 पतरस 4:17-18 यदि धर्मी व्यक्ति कठिनता से ही उद्धार पाएगा

तुलना करें : 1 कुरिन्थियों 3:13-15 हर एक का **काम** प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन आग के साथ प्रगट होगा और **वह आग ही हर एक का काम परखेगी कि कैसा है**? (14) जिस का काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह **मजदूरी** पाएगा। (15) और यदि किसी का काम जल जाएगा, तो **हानि** उठाएगा; पर **वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते।।**

इब्रानियो 6:7 भूमि - विश्वासी - नष्ट नहीं होंगे, लेकिन कचरा जो भूमि उपजाती है, जो व्यर्थ है, दूर कर दी जाएगी।

परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य कर रहा है कि हमें परिपक्वता के स्तर तक लाए, ताकि हम सब को "पुत्रत्व" में पहुँचा दे।

इब्रानियों 6:1 इसलिये ... हम **सिद्धता की ओर बढ़ते जाएं,** और मरे हुए कामों से **मन फिराने**, और परमेश्वर पर विश्वास करने, ...(3) और यदि परमेश्वर चाहे, **तो हम यहीं करेंगे**।

यह विश्वास/ भरोसे/ आज्ञाकारिता और क्रूस पर यीशु मसीह के पूरे हुए कार्य में चलने का विषय है । और **उस पर कलंक लगाना** नहीं

अनन्त उद्धार के लिए - **उसके** क्रूस को उठाओ

उस पर तथा उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के द्वारा उसके पूरे हुए कार्य पर विश्वास करो। इसमें कुछ और **न** जोड़ें। यीशु मसीह तुम्हारा **उद्धारकर्ता** है।

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर **विश्वास** करे, वह नाश न हो, परन्तु **अनन्त जीवन पाए।**

रोमियों 10:9-11 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर **अंगीकार करे** और **अपने मन से विश्वास करे,** कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।(10) क्योंकि धार्मिकता के लिये **मन से विश्वास किया जाता है**, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

दैनिक उद्धार के लिए - **अपने** क्रूस को उठाओ

स्वयं का त्याग और पाप और शैतान पर विजय में उसके लिए जीना। यीशु मसीह तुम्हारा **प्रभु** है।

मत्ती 10:38 और जो **अपना क्रूस लेकर** मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। (39) जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा।

लूका 9:23 उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इनकार करे और **प्रति दिन अपना क्रूस उठाए** हुए मेरे पीछे हो ले।

लूका 6:46 जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?